Sahaja Yoga Central Committee of India
(Formed as per instructions given on July 20, 2008 by Mataji Shree Nirmala Devi, after Guru Puja)

Her Holiness Mataji Shree Nirmala Devi
(Founder of Sahaja Yoga)

communications@syccindia.org

जय श्री माताजी

'' मानव प्रकृति ऐसी ही है कि आसानी से यह असत्य से अपना तादात्मय स्थापित करती है। जो कुछ भी सत्य है उसके साथ मनुष्य मात्र का समझौता करना अत्यंत कठिन है और सत्य के साथ यह समस्या है कि यह समझौता नहीं कर सकता।''

''महामाया स्वरूप'', सहस्त्रार पूजा, कबैला (इटली), 8 मई 1994

'' तो अब आप वही हो, अब आप सभी देवदूत हैं। एक बात है कि आप नहीं जानते हैं कि आप देवदूत हैं जबकि वे अपने बचपन से ही इस से अवगत थे। यदि आप जानते हैं कि आप देवदूत हैं, आपके सभी गुण प्रकाशित होने प्रारम्भ हो जायेंगे और आपको आश्चर्य होगा कि किसी भी कीमत पर सत्य के साथ खड़ा होने का गुण इतनी आसानी से आपके लिये प्रबंधित होगा, क्योंकि आपको यह अधिकार दिया गया है, आपको विशेष आशीर्वाद दिये गये हैं, विशिष्ट दैवीय संरक्षण दिया गया है और यदि आप न्याय परायण के साथ खड़े हैं और यदि आप सत्य के साथ खड़े हैं, आपकी रक्षा के लिये सभी प्रकार की सहायता आप को दी जायेगी।''

श्री हनुमान पूजा, मार्गेट (यू० के०), 23 अप्रैल 1989

द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट

और

एच० एच० श्री माताजी निर्मला देवी सहज योग ट्रस्ट

(सामान्यतः **नैशनल ट्रस्ट** के नाम से जाना जाता है। जिसे यहाँ **एन० डी० एस० वाई० ट्रस्ट** के नाम से दर्शाया गया है।)

के बीच एक तुलना

सत्य के विषय में जागरूकता लाने के लिय **द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट (एल० ई० टी०), (श्री माताजी के दृष्टिकोण के अनुरूप गठित) और एन० डी० एस० वाई० (सर सी० पी० के दृष्टिकोण के अनुरूप गठित) के गठन एवं कार्यशैली की पृष्ठभूमि की तुलना की जा रही है।**

यह भारत में सहजयोग के सुचारू रूप से संचालन के दृष्टिकोण से, एवं श्री माताजी निर्मला देवी की इच्छाओं और दिशा निर्देशों के अनुरूप क्रियान्वयन के लिये महत्वपूर्ण है। इस तुलना का उद्देश्य किसी भी रूप में भारतीय सहजयोगियों को द्विशाखित या विभाजित करना कदापि नहीं है। यह प्रयास उन सभी सत्य साधकों को एकजुट करना है जो विभिन्न सिद्धान्तों एवं अज्ञानताओं के कारण विभाजित हैं ताकि वर्तमान कलयुग (अंधकार का युग) से सतयुग (सत्य का युग) का उदय हो सके।

सत्य को जानने हेतु खुले मन एवं जिज्ञासा से इसे पढ़ने वाले सभी सहजयोगियों का हम स्वागत करते हैं। सत्य जो है वही है इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। जैसा कि श्री माताजी अपने व्याख्यान इससे प्रारम्भ करती हैं ''सत्य को खोजने वाले साधकों को मेरा प्रणाम'', हम सहजयोगियों से आग्रह करते हैं कि वे श्री माताजी से पूछें और इन दोनों न्यासों के (ट्रस्ट) डीड/न्यासपत्रों की चैतन्यलहरियों को जाँचें और उनके द्वारा निर्देशित हों।

द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट, मुंबई (एल० ई० टी०)	**एच० एच० श्री माता जी निर्मला देवी सहज योग ट्रस्ट** (सामान्यतः नैशनल ट्रस्ट के नाम से जाना जाता है, जिसे यहाँ एन० डी० एस० वाई० ट्रस्ट के नाम से दर्शाया गया है)
1. गठन	
द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट, मुंबई (एल० ई० टी०) प्रथम एवं सबसे पुराना सहज योग ट्रस्ट है जिसे परम पूजनीय श्री माताजी निर्मला देवी ने 8 मार्च 1972 (नारगोल में 5 मई 1970 को सहस्त्रार खोलने के दो वर्ष के भीतर ही), अपने कार्य को प्रोत्साहित एवं प्रचारित करने के लिये किया था। श्री माताजी ने इसे चैरिटी कमिश्नर ग्रेटर मुंबई के साथ पंजीकृत करवाया था। **श्री माताजी ने इटर्नल शब्द का प्रयोग किया था** जिसका अर्थ है शाश्वत/स्थायी या सदैव बना रहने वाला है, किसी शुरूआत या अन्त के बगैर। 1972 से ही श्री माताजी की इच्छा थी कि इसका अस्तित्व सनातन बना रहे।	**एच० एच० श्री माताजी निर्मला देवी सहज योग ट्रस्ट** का गठन 7, अप्रैल 2005 में हुआ (सहस्त्रार खुलने के 35 वर्ष बाद/सहजयोग के प्रारम्भ के 35 वर्ष बाद)। **यह ट्रस्ट श्री माताजी के मौन हो जाने के बाद सर सी० पी० एवं उनके सहयोगियों द्वारा गठित किया गया था। ट्रस्ट डीड (न्यास विलेख) पर किये गये हस्ताक्षर श्री माताजी के सामान्य हस्ताक्षर से भिन्न हैं।** (संभवतः रेसपेरिडाल जैसी दवाईयों के दिये जाने के कारण, जैसा कि सर सी० पी० के 2005 के पत्र में उल्लिखित है।)
2. ट्रस्ट डीड/न्यासपत्रों के उद्देश्य	
ट्रस्ट डीड/न्यासपत्र के उद्देश्यों की रूपरेखा श्री माताजी द्वारा बनाई गयी थी जिसे उन्होंने स्वयं हस्ताक्षरित किया था। ट्रस्ट डीड में 22 उद्देश्य हैं जो सम्पूर्ण मानव जाति के उद्धार की उनकी स्पष्ट सोच को दर्शाते हैं **यह उद्देश्य सहजयोग से बहुत आगे के हैं** एवं अनुलग्नक 'अ' में दिये गये हैं।	इस ट्रस्ट डीड में 37 उद्देश्य हैं **जिनका निर्धारण व्यावसायिक/सरकारी अधिकारियों के द्वारा किया गया** है। सहजयोग/आध्यात्मिक उत्थान से संबंधित कुछ उद्देश्यों को छोड़कर **शेष सभी किसी एन० जी० ओ०** के समान/सामाजिक–आर्थिक आधार पर ही हैं। भाषा **अफ़सरशाही है और श्री माताजी की परिकल्पना के अनुरूप नहीं है।** ये आत्मसाक्षात्कार को संगीत, ललित कला और अन्य माध्यमों के द्वारा पाने की बात करते हैं जो श्री माताजी की शिक्षा, जिसमें केवल सहजयोग के द्वारा ही आत्मसाक्षात्कार की बात कही गयी है, के विरोध में है। इसमें गुरुओं एवं पंडितों द्वारा सृजित शास्त्रीय संगीत एवं ललित कला को तथा एच० एच० श्री माताजी निर्मला देवी के अभिभाषण और अन्य कार्यों को संचित करने की भी बात की गयी है। स्पष्टतः **यह सहजयोग और श्री माताजी के अपेक्षित सम्मान के अनरूप नहीं है।** उद्देश्य अनुलग्नक 'अ' में दिए गए हैं।

3. संपत्तियाँ	
1972 से सहजयोग की सारी गतिविधियों का आयोजन इसी नाम के तहत किया गया है। सारी संपत्तियाँ जैसे निर्मल नगरी, गणपतिपुळे, शेरे–पुणे, कोथरुड़ आश्रम पुणे, अरडगाँव (राहुरी), अंतर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र, सी० बी० डी० बेलापुर, संगम, श्री पी० के० साल्वे कला प्रतिष्ठान वैतरणा, इत्यादि **सारी संपत्तियों को श्री माताजी ने इसी न्यास (ट्रस्ट) के नाम से खरीदा था।** इन स्थानों पर अनेक साकार पूजायें सम्पन्न हुई हैं, फलस्वरूप ये सभी स्थान श्रीमाताजी द्वारा चैतन्यित हैं। दरअसल गणपतिपुळे की जमीन पर 1985 से 2003 तक प्रतिवर्ष साकार पूज़ा का आयोजन होता रहा। इसके अलावा यहाँ पर श्रीमाताजी की उपस्थिति में विभिन्न सेमीनार एवं भारत भ्रमण का भी आयोजन होता रहा।	जितनी भी जानकारी हमें उपलब्ध है, उससे यह स्पष्ट है कि **श्रीमाताजी ने कोई भी संपत्ति इस न्यास के नाम से नहीं खरीदी थी।** एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट द्वारा छिंदवाड़ा से समीप लिंगा में जो जमीन खरीदी गई वह श्रीमाताजी की इच्छाओं के अनुकूल नहीं थी। कई प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार उन्हे वह जमीन पसंद नहीं थी और वो वहाँ नहीं रहना चाहती थीं।
4. न्यासों का क्षेत्र/विलय	
न्यास की ट्रस्ट डीड, न्यास को भारत के विभिन्न प्रान्तों एवं विदेशों में भी **लाइफ इटर्नल संस्था की स्थानीय शाखाऐं खोलने, व्यवस्थित करने व चलाने हेतु अधिकृत करती है।** यहाँ यह गौरतलब है कि ''उनकी'' यह इच्छा थी कि इस न्यास की शाखायें विदेशों में भी खोली जायें। स्पष्ट तौर पर **''वो'' चाहती थीं कि न्यास अपने कार्यों में अंतर्राष्ट्रीय बने।**	2005 में एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट की स्थापना के समय से ही, उसे **नैशनल ट्रस्ट** के रूप में प्रक्षेपित/प्रचारित किया गया। परन्तु, **न्यास विलेख (ट्रस्ट डीड) में कहीं भी न्यास का उल्लेख नैशनल ट्रस्ट के रूप में नहीं किया गया है।** विदेशों में शाखायें खोलने का भी उल्लेख न्यास विलेख (ट्रस्ट डीड) में नहीं किया गया है। एच०एच० श्री माताजी निर्मला देवी सहज योग ट्रस्ट को नैशनल ट्रस्ट के रूप में स्थापित करने का कोई वैधानिक आधार नहीं है और यह भारत में सहजयोग से संबंधित समस्याओं की जड़ है। एन0डी0एस0वाई0 ट्रस्ट को शीर्ष न्यास के रूप में प्रस्तुत कर यह एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट को सहजयोग का श्रेष्ठ ट्रस्ट (ट्रस्ट न्यास) होने की धारणा देता है। **<u>न्यासों का विलय:</u>** भारत में एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट में समस्त सहजयोग न्यासों का विलय करके सहजयोग क्रिया–कलापों के केन्द्रीकरण का प्रयत्न किया गया था। ग्यारह लाईफ इटर्नल ट्रस्ट, जो कि भारत में श्रीमाताजी के साकार स्वरूप के दौरान अस्तित्व में थे, उनमें से आठ न्यासों को एक प्रस्ताव पारित कर एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट में

	विलय करवाया गया। आज वे सभी लाईफ इटर्नल ट्रस्ट कानूनी कारणों से एक निष्क्रिय अवस्था में हैं। लेखा परीक्षक (auditor) की टिप्पणियों के अनुसार एन०डी०एस०वाई० **ट्रस्ट ने इन सभी न्यासों का विलय चैरिटी/इनकम टैक्स कमिश्नर की अनुमति के बिना किया था** और अपने वित्तीय विवरण के लेखा–जोखा में इन विलयित न्यासों की अचल सम्पत्तियों क व्यय को दर्शाया था। 2004 में भारत में समस्त सहजयोग संस्थाओं के कार्यों के निरीक्षण हेतु श्री माताजी के द्वारा लेखा परीक्षण समिति का गठन किया गया था। एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट के गठन के पश्चात् भी, इसी लेखा समिति को यह अधिकार सौंपा गया कि वह इन सहजयोग ईकाइयों के वित्तीय, कानूनी एवं लेखांकन (accounting) संबंधी मामलों का निरीक्षण करे। बाद में एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट में न्यासों के विलय के मूल्यांकन का कार्य भी इसी समिति को सौंपा गया था। मूल्यांकन के पश्चात् लेखा समिति ने श्रीमाताजी एवं बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ को एक रिपोर्ट सौंपी, जिसमें यह कहा गया कि **न्यासों का विलयीकरण व्यवहारिक तौर पर/कानूनी रूप से संभव नहीं था।**
5. गोष्ठी/निर्णय	
न्यास (ट्रस्ट) की अध्यक्ष होने के कारण **सारे** महत्त्वपूर्ण **फैसले,** जैसे कि न्यासियों की नियुक्ति, संपत्ति की खरीद/क्रय आदि **श्री माताजी द्वारा ही लिये जाते थे।**	न्यास की सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी के अनुसार श्री माताजी ने एन०डी०एस०वाई० **ट्रस्ट की किसी भी गोष्ठी को संबोधित नहीं किया।**
6. उनके दिशा निर्देशों का अनुपालन	
अपने कार्यों द्वारा श्री माताजी ने स्पष्टतः क्या दर्शाया?	**अपने कार्यों द्वारा श्री माताजी ने स्पष्टतः क्या दर्शाया?**
• प्रारम्भ में मुंबई, तत्पश्चात् दिल्ली में श्री माताजी ने जन्मदिवस पूजा का आयोजन किया। **उन्होंने छिंदवाड़ा में कभी भी जन्मदिवस पूजा का आयोजन नहीं किया।** • सन् 1985 से 2003 तक प्रति वर्ष उन्होंने गणपतिपुळे महाराष्ट्र में क्रिसमस पूजा का आयोजन किया एवं अपने कई प्रवचनों में उन्होंने हमारे आध्यात्मिक उत्थान में गणपतिपुळे के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इसे वह स्थान माना,	• एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट ने 2008 से अंतर्राष्ट्रीय जन्म दिवस पूजा का आयोजन लिंगा, छिंदवाड़ा में शुरु किया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार श्री माताजी को लिंगा की भूमि नापसंद थी और वो वहाँ नहीं रहना चाहती थीं। • एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिसमस पूजा की शुरुआत नारगोल, गुजरात में की। श्री माताजी ने कभी भी क्रिसमस पूजा नारगोल में नहीं की, वहाँ केवल एक दिवाली पूजा 1995 में की गई और उन्होंने

जहाँ श्री गणेश एक सम्पूर्ण परिपक्व रूप में हैं एवं यह महागणेश का स्थान है, जहां चक्रों की सफाई बहुत आसानी से हो जाती है।	एक न्यासी से यह कहा कि नारगोल आने में उन्हें काफी कष्ट हुआ था।
7. निष्कर्षः श्री माताजी के वचनों एवं कार्यों से हम क्या निष्कर्ष निकालते हैं?	
• **उनकी परिकल्पना के अनुसार सृजित द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट ही श्री माताजी की असली धरोहर हैं** और जिसकी स्थापना उन्होंने अनंतकाल तक उनके कार्य भारत एवं विदेशों में शाश्वत रूप से चलाये जाने के इरादे से की थी।	• एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट की **परिकल्पना, गठन, संयोजन एवं प्रबंधन सर सी० पी० द्वारा किया गया था। और श्री माताजी का उससे कुछ लेना देना नहीं था। सारी नियुक्तियाँ सर सी० पी० और उनके गुट/दल द्वारा की जाती थी न कि श्री माताजी द्वारा।** एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट की नियमावली ने उपाध्यक्ष यानी सर सी० पी० एवं कुछ नौकरशाहों को असाधारण विशेषाधिकार दिये। इन्हीं विशेषाधिकारों का प्रयोग करके सन् 2011 में सर सी० पी० ने कई न्यासियों को सामूहिक रूप से बर्खास्त कर दिया।
• **द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट की मुख्य विशेषता इसका विकेन्द्रीकरण है।** जब दिल्ली में अचल सम्पत्ति का क्रय करना था, तब कार्य संबंधी सुविधा हेतु श्री माताजी ने लाइफ इटर्नल ट्रस्ट दिल्ली का गठन किया। उन्होंने इसे एल० ई० टी० मुंबई के आधीन नहीं किया और इसी प्रकार अन्य कई एल० ई० टी० का गठन हुआ। वह यह कभी नहीं चाहती थीं कि जो शक्तियाँ सहजयोग के कार्यों का प्रबंधन करती थीं, उनका केन्द्रीकरण हो।	• 2008 के गुरु पूजा प्रवचन में श्री माताजी का यह निर्देश था कि सहजयोगी विभिन्न समूहों का गठन करके आत्मसाक्षात्कार का कार्य आगे बढ़ायें। **यहाँ वह सहजयोग के कार्यों के विकेन्द्रीकरण की बात कर रही हैं, न कि केन्द्रीकरण की।** • जुलाई 20, 2008 में अपने गुरु पूजा प्रवचन के पश्चात् कबेला में उन्होंने सेन्ट्रल कमिटी, इण्डिया के गठन के लिये निर्देशित किया था, यद्यपि उस समय एन०डी०एस०वाई० ट्रस्ट अस्तित्व में था, **इसका तात्पर्य यह है कि वह चाहती थीं कि भारत में सहज के कार्यों को, सहजयोग सेन्ट्रल कमिटी, इण्डिया (SYCCI) संचालित करे न कि** एन०डी०एस०वाई० **ट्रस्ट।**
• सन् 2008 में जो निर्देश श्री माताजी ने अपने गुरु पूजा प्रवचन के पश्चात् दिया था उसके अनुसार सन् 2013 में एल० ई० टी० मुंबई, दिल्ली, अन्य सहज इकाईयाँ एवं भारत के कई वरिष्ठ समन्वयकों ने आगे बढ़कर सहजयोग सेन्ट्रल कमिटी ऑफ इण्डिया का गठन किया।	• **अभी तक** एन०डी०एस०वाई० **ट्रस्ट ने SYCCI को मान्यता नहीं दी है, न ही उसके सदस्य बनने के लिये हामी भरी है।** इसके विपरीत उसने एक संसूचना जारी की है जिसमें कि उसने अपने को ही सेन्ट्रल कमिटी घोषित किया है जो कि श्री माताजी के निर्देशों के प्रतिकूल है।

सहज योग सेन्ट्रल कमिटी ऑफ इण्डिया के समस्त सदस्य
1 जुलाई 2021

अनुलग्नक 'अ

द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट, मुंबई (एल० ई० टी०)	**एच० एच० श्री माता जी निर्मला देवी सहज योग ट्रस्ट** (सामान्यतः नैशनल ट्रस्ट के नाम से जाना जाता है, जिसे यहां एन० डी० एस० वाई० ट्रस्ट के नाम से दर्शाया गया है)
डीड/न्यासपत्र के अनुसार उद्देश्य–	
द लाइफ इटर्नल ट्रस्ट, मुंबई के उद्देश्य जो श्री माताजी द्वारा निर्धारित किये गये थे:(ट्रस्ट डीड में दिये गये क्रमानुसार): श्री माताजी के कार्यों को निम्न रूप से सरल करना– 1. कुण्डलिनी अर्थात् अवशिष्ट चेतना को उत्तेजित/जागृत कर आध्यात्मिक उत्क्रान्ति/विकास की प्रक्रिया को तीव्र करना जो अन्ततः आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति है। (दूसरा जन्म जैसा कि बाईबल, कुरान, भारतीय ग्रन्थों एवं सम्पूर्ण विश्व के महान अवतरणों एवं संतो द्वारा परिभाषित किया गया है) 2. उपर्युक्त पैरा में वर्णित उत्क्रान्ति/विकास को ''सहजयोग'' की विधि द्वारा प्राप्त करना अर्थात् श्री माताजी द्वारा विकसित ध्यान की प्रयासरहित, सरल एवं तनाव रहित विधि। इस उद्देश्य से ध्यान केन्द्रों का आयोजन करना। इसमें मानव के सभी बाह्य आडंबरों जैसे अनुष्ठान, पूजा, प्रार्थना, भजन गायन/सस्वर गायन, अध्ययन, सन्यास, गुरु की पूजा या अन्य शारीरिक अभिव्यक्तियों की कोई आवश्यकता नहीं है। 3. इस प्रक्रिया द्वारा ''शून्य'' बिन्दु पर पहुँचना जहाँ व्यक्ति प्रयास रहित हो जाता है और ईश्वर की लीला को महसूस करना प्रारम्भ करता है। अन्ततः एक ऐसी अवस्था पर पहुँचना जहाँ अहं ('मैं') छूट जाता है और वह ईश्वर एवं उसकी रचना से एकाकार हो जाता है। 4. समागमों द्वारा लोगों के मस्तिष्क को खोलकर/विस्तृत कर उन्हें ''निर्विचार चेतना'' के	**एच० एच० श्री माताजी निर्मला देवी सहजयोग ट्रस्ट के उद्देश्य (ट्रस्ट डीड में दिये गये क्रमानुसार):** न्यास के उद्देश्य निम्नवत् हैं– 1. एक ऐसी संस्था या संगठन या केन्द्र का निर्माण करना जिसमें किसी भी प्रकार की लघु एवं दीर्घ कालिक तकनीकी एवं गैरतकनीकी शिक्षा दी जा सके और जिसमें संगीत तथा कला की परीक्षा सम्मिलत हो। 2. व्यावसायिक शिक्षा एवं कोर्स को प्रोत्साहित करने हेतु जिसमें लघु एवं दीर्घ अवधि के बढ़ईगिरी, लोहारगिरी, बिजली मिस्त्री, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, कृषि, जैविक कृषि, ड्रिप सिंचाई, आयुर्वेद और आयुर्वेदिक जड़ी बूटियां, प्राकृतिक शक्तियों के माध्यम से वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों की स्थापना, भारतीय शास्त्रीय संगीत, गायन एवं वादन के सिद्धान्त एवं अभ्यास, विभिन्न माध्यमों में की जाने वाली चित्रकला की प्राचीन परंपरा, चित्रण, रेखांकन, ग्राफिक्स, मुद्रण, मूर्ति कला, मिट्टी से कलाकृतियां बनाना, ट्रेसिंग, स्क्रीन प्रिंटिंग, कढ़ाई, ब्रोकेड (जामावार) कार्य, हस्तशिल्प और ललित कला के अन्य संकाय आदि सम्मिलित हैं। 3. न्यास (ट्रस्ट) द्वारा चालित पूर्व उल्लेखित संस्थानों के विद्यार्थियों हेतु भ्रमण की व्यवस्था करना जिससे उनके हुनर का प्रदर्शन, भारतीय कला और संस्कृति और विशेषज्ञता के प्रसार के उद्देश्य से भारत एवं विदेश के अन्य लोगों के समक्ष किया जा सके। 4. कुंडलिनी जागरण द्वारा आध्यात्मिक उत्थान की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना और **संगीत, ललित कला और अन्य माध्यमों के द्वारा आत्मसाक्षात्कार**

विषय में बताना जो सूक्ष्म को प्रकट करती है और वर्तमान में जो स्थूल शब्दों, पुस्तकों और सिद्धान्तों में खो गयी है।

5. उस केवल एक आन्तरिक जीवंत धर्म के विषय में अवगत कराना जो सभी मनुष्यों में धर्म के बाह्य आचरण एवं नियमों के मायाजाल में खो गया है और मृत पड़ा हुआ है और श्री माताजी की इच्छाओं के अनुसार इसके लिए यात्राओं व आध्यात्मिक सभाओं का आयोजन करना।

6. श्री माताजी के आत्मसाक्षात्कारी शिष्यों की सहायता से ईश्वर की कृपा दृष्टि के आगमन का समाचार प्रसारित करना।

7. श्री माताजी के दिव्य स्पर्श द्वारा एवं उनके अन्य शिष्यों जिनमें आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से सामूहिक चेतना का विकास हो चुका है, के द्वारा लोगों के शारीरिक एवं मानसिक रोगों का इलाज करना।

8. वास्तविक आनन्द जो स्वयं के भीतर ही है का रसास्वादन करवाना। श्री माताजी द्वारा विकसित ध्यान की विभिन्न विधियों का अभ्यास करवाना तथा ध्यान शिविर लगाना।

9. आत्मसाक्षात्कारी लोगों की एक नयी पीढ़ी का सृजन करना और इन सभी बच्चों को बुरी मंशा के विरूद्ध मातृवत् संरक्षण देना तथा उनके कुशल क्षेम का ध्यान रखना।

10. साधकों के लिये साधना हेतु आश्रमों का निर्माण एवं संचालन करना और सृजन के इन नये आयामों को अभिव्यक्त करने वाले सभी क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करना।

11. इस कार्य को स्कूल, कॉलेजों और अन्य संस्थानों एवं समूहों में प्रारम्भ करना और युवाओं के लिये स्कूलों का संचालन करना।

12. कला, संस्कृति एवं संगीत की प्रदर्शनियां एवं वे सारी गतिविधियों का आयोजन करना, जो प्रेम और सौंदर्य की वैश्विक भाषा के द्वारा ''आंतरिक **कराना** और ''चैतन्य'' अर्थात दिव्य तरंगों और नित्य आनन्द एवं परमानंद की संसूचना में इन माध्यमों का प्रयोग करना।

5. **पूर्वलिखित पैराग्राफ में वर्णित उत्थान को ''सहजयोग'' अभ्यास द्वारा प्राप्त करना** जैसा कि एच० एच० श्री माताजी निर्मला देवी जी द्वारा सिखाया और प्रसारित किया गया। ''सहजयोग'' जैसा कि एच० एच० श्री माताजी श्रीमती निर्मला देवी जी द्वारा विकसित किया गया का अर्थ है एक प्रयासरहित सरल एवं तनाव मुक्त ध्यान विधि।

6. श्री माताजी निर्मला देवी श्रीवास्तव द्वारा परिकल्पित जाति, प्रजाति, धर्म, राष्ट्रीयता और संस्कृति से परे एक संयुक्त मानव परिवार को प्रोत्साहित करना और इसके अतिरिक्त उन सारे संगठनों को सभी प्रकार से संभव सहायता प्रदान करना जो इसी प्रकार के पैगाम एवं दृष्टिकोण को विविध प्रकार से आगे बढ़ाने में लगे हैं।

7. लोगों को **''सहजयोग'', संगीत एवं ललित कला द्वारा अपने रोगों से इलाज के संबंध में प्रशिक्षित करना एवं सहायता करना।**

8. जाति, धर्म या प्रजाति का विचार किये बिना सामूहिक विवाहों की व्यवस्था करना और दैवीय अनुकंपा के साथ एकविवाह व्यवस्था की पवित्रता को बढ़ावा देना।

9. **वृद्ध साधकों हेतु वृद्धाश्रम** एवं साधना की अवधि में **साधकों के प्रयोगार्थ आश्रमों का निर्माण एवं संचालन।**

10. देशी/पारंपरिक विशेषतः आयुर्वेदिक दवाईयों पर शोध करना। इस उद्देश्य के लिये नयी जड़ी बूटियों और पौधों की खोज को प्रोत्साहित करना। ऐसे पौधे और जड़ी बूटियां उगाने के लिये फार्म हाउस का अनुरक्षण करना। देशी, विशेषतः आयुर्वेदिक दवायों का निर्माण करना।

11. सहजयोग के चैतन्य, ड्रिप सिंचाई और प्राकृतिक खाद के द्वारा (किसी भी प्रकार के कार्बनिक उर्वरक और कीटनाशक इत्यादि के प्रयोग के

चेतना'' जिसे अति इन्द्रिय के नाम से भी जाना जाता है और जो सूक्ष्म संवेदनशीलता को प्रकाशित करे, ताकि व्यक्ति के व्यवहार एवं सौंदर्य की उन्नति हो सके।

13. प्रेम के शाश्वत् नियमों को सिद्ध करने वाले साधकों के आध्यात्मिक अनुभव को प्रकाशित एवं वर्णित करना, जिससे प्रेम की ऊर्जा से उस घृणा को जीता जा सके, जो युद्ध विघटन एवं विनाश का कारण है।

14. भौतिक तृप्ति और अज्ञात के बीच की शून्यता को दूर करना जो भय, बेचैनी, अनिद्रा एवं तनाव का कारण है और वास्तविकता से परे एवं मिथ्या, वैराग्य की ओर ले जाने वाला है।

15. सत्य के ज्ञान को बताने के लिये **श्री माताजी द्वारा एवं उनके अनुयायियों द्वारा उनकी अनुमति से लिखे गये** जर्नल, पुस्तकें एवं अन्य साहित्य को प्रकाशित एवं संपादित करना, जिससे विकास की उच्चतम स्थिति को प्राप्त मानव अपने गौरव, प्रतिष्ठा एवं स्वतंत्रता में और ऊपर उठ सके । इसके साथ–साथ न्यास (ट्रस्ट) द्वारा चालित अन्य संस्थानों के क्रियाकलापों को लोगों तक पहुँचाना।

16. श्री माताजी द्वारा या उनके शिष्यों द्वारा चैतन्यित साधारण दवाओं एवं तेलों को श्रीमाताजी के ही निर्देशानुसार रोगियों को वितरित करना।

17. प्रेस वार्ताओं का आयोजन करना जिसमें ब्रह्मांडीय शक्तियों की गतिविधियों एवं लाईफ इटर्नल संस्थाओं की सही तस्वीर प्रदर्शन और विचार–विमर्श के द्वारा प्रस्तुत की जा सके।

18. श्री माताजी के निर्देशानुसार पुस्तकालयों के लिये पुस्तकों का संग्रह करना।

19. अस्वस्थ एवं असमर्थ लोगों के लिये अस्पताल, नर्सिंग होम एवं आरोग्य निवासों का निर्माण करना।

20. सामूहिक आध्यात्मिक शक्ति द्वारा आध्यात्मिकता के विरूद्ध कार्यरत विनाशकारी शक्तियों जैसे दुष्ट बिना) फार्म हाउस में पौधों को उगाना। कुशल एवं अकुशल और अन्य जरूरतमंद महिलाओं को पौधारोपण, जड़ी बूटियों एवं दवायों का निर्माण एवं बाजारीकरण, फलों सब्जियों और जड़ी बूटियों का संरक्षण एवं परिरक्षित/उपचारित और अन्य किसी भी कृषि संबंधी वस्तुओं एवं हस्तशिल्प से संबंधित रोजगार के अवसर और प्रशिक्षण देना।

12. पुरूषों और महिलाओं दोनों के लिये कृषि कार्यक्रमों जैसे पशुपालन, दुग्ध उद्योग, मतस्य पालन, हथकरघा और हस्तशिल्प, सब्जियों और जड़ी बूटियों की खेती, मधुमक्खी पालन, सामाजिक वानिकी और बंजर भूमि विकास और खादी एवं गृह उद्योग का आयोजन करना।

13. कला, संस्कृति, संगीत और तकनीकी निपुणता की प्रदर्शनियों द्वारा **व्यवहार एवं सौन्दर्य बोध को सुरुचिपूर्ण रूप से बेहतर करना**।

14. **परिवर्तन लाना** एवं **प्रेम प्रदान करना। यह** घृणा और ईर्ष्या का स्थान ले सकता है, जो दिव्य मूल्य व्यवस्था के विघटन और विनाश का मुख्य कारण हैं।

15. **श्री माताजी एवं उनके अनुयायियों द्वारा लिखित** पत्रिकाओं, जर्नल, पीरीयाडिकल्स, पुस्तकें, पैम्फलेट और अन्य साहित्य का प्रकाशन एवं संपादन तथा उन्हें **सामान्य जन में बेचना।** इसका उद्देश्य है श्री माताजी की शिक्षाओं का प्रसार करना, सहजयोग का ज्ञान एवं अभ्यास, भारतीय संस्कृति, विरासत और सत्य के पैगाम, शांति, एकजुटता और सामंजस्य जैसा कि श्री माताजी जी द्वारा कल्पित था, को प्रसारित करना।

16. सार्वजनिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों, सेमिनार, संवाददाता सम्मेलनों का आयोजन करना ताकि न्यास (ट्रस्ट) द्वारा स्थापित संस्थानों के क्रियाकलापों का विवरण दिया जा सके।

17. पुस्तकें, कैसेट (ऑडियो एवं वीडियो), सी०डी०, वी०सी०डी०, डी०वी०डी०, रिकार्ड की गयी एलबम और ऐसी ही अन्य नवीनतम तकनीकी उपकरणों और संचयन के अन्य साधन हेतु **पुस्तकालयों का**

आत्मायें, सम्मोहन पद्धति, सिद्धियाँ और लोगों का धर्म के नाम पर शोषण का विरोध करना।

21. सत्य को खोजने वाले उन सब सच्चे साधकों, जो सिद्धान्तों एवं अनभिज्ञता के कारण पृथक् हैं, को एकजुट करना जिससे सर्वनाश के स्थान पर वर्तमान कलियुग (अंधकार का युग) से सत्ययुग (सत्य का युग) का उदय हो सके। समस्त मानव संसाधनों को संगठित कर इस महान कार्य के लक्ष्य को प्राप्त करना जिसके लिये सामूहिक उत्क्रान्ति की आवश्यकता होगी।

22. भारत के विभिन्न भागों में एवं विदेशों में लाइफ इटर्नल संस्थाओं के स्थानीय ध्यान केन्द्रों को खोलना एवं संगठित करना एवं चलाना। यह ध्यान केन्द्र इस विशिष्ट समझ के साथ खोले जायें कि ध्यान का मार्ग ही सम्पूर्ण मानवजाति की नियति है। लाइफ इटर्नल के लिये राज्य, राष्ट्र एवं प्रजातियों की सभी सीमायें कृत्रिम एवं महत्वहीन हैं।

निर्माण करना जिनमें उस्तादों और पंडितों द्वारा सृजित शास्त्रीय संगीत और ललित कला एवं एच० एच० श्री माताजी निर्मला देवी के भी व्याख्यानों और कार्यों को भी संचित किया जा सके ।

18. संचार माध्यम जैसे कि टेलीफिल्म, धारावाहिक और अन्य माध्यमों को विकसित, प्रस्तुत और तैयार किया जाये जिससे जनसाधारण को स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, माता एवं शिशु देखभाल, यौन संचरित रोग जैसे एच० आई० वी०, एड्स, की रोकथाम, बाल विवाह निवारण, अशिक्षा उन्मूलन और अन्य सभी सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता फैलाना।

19. सामान्य लोगों के प्रयोग और लाभ के लिये अस्पतालों, मैडिकल कॉलेजों, नर्स प्रशिक्षण संस्थानों, मातृत्व क्लीनिक, आरोग्य/स्वास्थ्यलाभ निवास, धर्मार्थ/परोपकारी निवास, सचल/(मोबाइल) दवाखाना, मैडिकल प्रयोगशालायें, मातृत्व निवास, बाल कल्याण केन्द्र, अनाथालय और गोद देने वाले संस्थान, विधवा एवं वृद्धों के लिये आश्रम अथवा इसी प्रकार के अन्य धर्मार्थी संस्थानों को भारत में किसी भी स्थान/स्थानों पर स्थापित करना, देखरेख और उन्हें धन एवं सामग्री से सामान्य जन के लिये उपयोग हेतु लाभान्वित करना।

20. युवा लोगों के लिये स्कूल, कॉलेज, पुस्तकालय, वाचनालय, छात्रावासों और अन्य संस्थानों की स्थापना, संचालन करना या सहायता करना या अन्य प्रकार से आर्थिक मदद देना। युवायों को युवा प्रशिक्षण केन्द्र उपलब्ध कराना , खेल कूद कार्यक्रमों हेतु संगठित कैम्प, एड्स के प्रति जागरूकता कैम्प, योग केन्द्रों के साथ–साथ परिवार नियोजन हेतु युवाओं को प्रोत्सहित करना और उन्हें सम्मिलित करना।

21. जातिभेद, रंगभेद या प्रजाति भेद से परे जरूरतमंद, अभावग्रस्त, दिव्यांगों, विधवाओं और गरीब लोगों को सहायता प्रदान करना।

22. प्राकृतिक आपदायों जैसे बाढ़, अकाल, भूकंप, दावानल, महामारी और इसी प्रकार की अन्य

आपदायों में राहत देना और संस्थानों, प्रतिष्ठानों या सहायता कार्य में रत व्यक्तियों को दान, अभिदान, या अंशदान देना।

23. परिवार कल्याण के किसी भी ऐसे कार्यक्रम जिसमें परिवार नियोजन, स्वास्थ्य देखभाल, स्वास्थ्य शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पारिवारिक जीवन संबंधी शिक्षा, जिसमें सीधे तौर पर परिवार नियोजन शामिल हो, को किसी अन्य अभिकरण या अभिकरणों की सहायता से तैयार, विकसित एवं लागू करना।

24. ग्रामीण पेय जल, पोषण, सचल/मोबाइल स्वास्थ्य देखभाल और प्रतिरक्षीकरण (इम्युनाइज़ेशन) एवं अन्य कोई भी कार्यक्रम जो लोगों के जीवन स्तर को बेहतर करने के लिये हो, में हिस्सा लेना, प्रोत्साहित करना, सहयोग करना और विशेषज्ञों से आवश्यक सहायता प्रदान करवाना और सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु एकीकृत ग्रामीण विकास परियोजनाओं को लेना।

25. स्कूल जाने वाले या घर पर रहने वाले बच्चों, नवजात शिशुओं, अपोषित या कुपोषित बच्चों, बीमार गर्भवती महिलाओं और दूध पिलाने वाली महिलाओं को पोषाहार दिये जाने की व्यवस्था करना।

26. सिंचाई हेतु कूओं, ट्यूबवैल, टैंक इत्यादि का निर्माण, देखरेख और मरम्मत करना तथा पेय जल जैसी मूलभूत सुविधायें प्रदान करना।

27. नगरीय एवं ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक विकास से संबंधित जनसंख्या शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा के लिये बैठकों, गोष्ठियों, सेमीनार, कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना।

28. केन्द्रीय एवं राज्य सरकारी उपक्रमों, अर्धसरकारी, सार्वजनिक या अन्तर्राष्ट्रीय निकायों से अनुदान लेकर न्यास के उद्देश्यों को पूरित करना जो न्यास के ढाँचे को भी बनायेगा। इसके अतिरिक्त न्यास (ट्रस्ट) अनुदान का लेखा–जोखा रखेगा और उसे प्रदायी संस्था को उपलब्ध भी करायेगा जैसा कि अनुदान या अन्यथा की शर्तों में आदेशित होगा।

29. केन्द्र एवं राज्य सरकारों से भवन, प्रशिक्षण केन्द्र, पुस्तकालय, शोध केन्द्र हेतु भूमि प्राप्त करने के लिये आवेदन करना जिससे न्यास (ट्रस्ट) की गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जा सके।

30. अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों, सरकारी और किसी न्यास (ट्रस्ट) संगठन या व्यक्ति से अनुदान प्राप्त कर अभावग्रत महिलाओं, कार्यरत महिलाओं हेतु निवास एवं वृद्धाश्रमों की स्थापना करना।

31. संगठित ग्रामीण विकास परियोजनाओं/परिवार कल्याण परियोजनाओं के लिये गाँव/गाँवों, ब्लॉक/जिलों को गोद लेना।

32. पुनर्वास/व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ–साथ दृष्टिहीनों के लिये निवास/केन्द्र की स्थापना करना।

33. सामान्य जन हेतु पार्क, जिमनेज़ियम और क्रीड़ासंकुल/स्पोर्टस काम्पलेक्स की स्थापना एवं रखरखाव के लिये अनुदान माँगना।

34. जल संरक्षण, जल संचयन और मृदा संरक्षण को स्थापित करना।

35. पर्यावरणीय उन्नयन एवं परिस्थितिकीय संतुलन हेतु परियोजनाऐं बनाना।

36. न्यास (ट्रस्ट) के कोष को प्राप्त करने की व्यवस्था के तहत दान, अभिदान, शुल्क, उपहार स्वरूप चल एवं अचल संपत्ति या धन या अन्य किसी प्रकार की सहायता, जिससे न्यास (ट्रस्ट) के उपरोक्त उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके और विभिन्न परियोजनाओं के द्वारा भी धनराशि प्राप्त की जा सके जिससे ट्रस्ट के उपरोक्त उद्देश्य पूर्ण किये जा सकें।

37. न्यास (ट्रस्ट) के सभी उद्देश्यों को इस प्रकार पूरित किया जाये कि इसकी धर्मार्थ होने की पहचान बनी रहे।